I J C R M
International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

Research Article

आत्म-प्रत्यय (Self-Concept) एवं अध्ययन आदतों का माध्यमिक विद्यालय विद्यार्थियों की शैक्षिक लब्धि से सह-संबंधात्मक अध्ययन

Dr. Shailesh Kumar Yadav
Assistant Professor, Teacher Education (B.Ed.), Kishori Raman Teacher's Training College, Mathura, Uttar Pradesh, India
(Affiliated by Dr. Bhimrao Ambedkar University, Agra)

Corresponding Author: * Dr. Shailesh Kumar Yadav

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.21902350

सारांश

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय एवं अध्ययन आदतों का उनकी शैक्षिक लब्धि के साथ सह-संबंध ज्ञात करना था। इस अध्ययन में सह-संबंधात्मक शोध विधि (Correlational Research Method) का प्रयोग किया गया। न्यादर्श के रूप में स्तरित यादृच्छिक न्यादर्शन प्रविधि द्वारा कक्षा नवमी एवं दशमी के 300 विद्यार्थियों (150 छात्र एवं 150 छात्राएँ) का चयन किया गया। आँकड़ा-संकलन हेतु डॉ. आर.के. सारस्वत की आत्म-प्रत्यय प्रश्नावली, पाल्सेन एवं शर्मा की अध्ययन आदत मापनी (PSSHI) तथा विद्यार्थियों के पूर्व वार्षिक परीक्षा-फल का उपयोग किया गया। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु पियर्सन के गुणन-आघूर्ण सह-संबंध गुणांक तथा 't'-परीक्षण का प्रयोग किया गया। अध्ययन के प्रमुख निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ कि आत्म-प्रत्यय एवं शैक्षिक लब्धि के बीच तथा अध्ययन आदतों एवं शैक्षिक लब्धि के बीच धनात्मक एवं सार्थक सह-संबंध विद्यमान है। शोध के परिणाम शिक्षकों, अभिभावकों एवं शिक्षा-नीति निर्माताओं के लिए महत्वपूर्ण शैक्षिक निहितार्थ प्रस्तुत करते हैं।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 05-07-2026
- **Accepted:** 09-08-2026
- **Published:** 12-08-2026
- **IJCRM:**5(4); 2026: 722-726
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

Yadav S K. आत्म-प्रत्यय (Self-Concept) एवं अध्ययन आदतों का माध्यमिक विद्यालय विद्यार्थियों की शैक्षिक लब्धि से सह-संबंधात्मक अध्ययन. Int J Contemp Res Multidiscip. 2026;5(4):722-726.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मूल शब्द: आत्म-प्रत्यय, अध्ययन आदतें, शैक्षिक लब्धि, माध्यमिक स्तर, सह-संबंध।

© 2026 Dr. Shailesh Kumar Yadav. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

1. प्रस्तावना

शिक्षा का मूल उद्देश्य बालक के सर्वांगीण विकास के साथ-साथ उसके व्यक्तित्व के प्रत्येक पक्ष को परिष्कृत करना है। विद्यालयी जीवन में विद्यार्थी की सफलता का सर्वाधिक प्रत्यक्ष एवं मान्य मापदंड उसकी शैक्षिक लब्धि (Academic Achievement) मानी जाती है। शैक्षिक लब्धि केवल बौद्धिक क्षमता का ही परिणाम नहीं होती, अपितु इसे अनेक संज्ञानात्मक (cognitive) एवं अ-संज्ञानात्मक (non-cognitive) कारक प्रभावित करते हैं। बुद्धि, अभिक्षमता, रुचि, अभिप्रेरणा, परिवेश एवं विद्यालयी वातावरण जैसे अनेक कारकों के साथ-साथ दो कारक ऐसे हैं जिनका शैक्षिक निष्पत्ति पर गहरा प्रभाव पड़ता है — विद्यार्थी का आत्म-प्रत्यय तथा उसकी अध्ययन आदतें।

आत्म-प्रत्यय वह मनोवैज्ञानिक संरचना है जिसके माध्यम से व्यक्ति स्वयं को समझता है, स्वयं का मूल्यांकन करता है तथा स्वयं के प्रति एक दृष्टिकोण विकसित करता है। जब कोई विद्यार्थी स्वयं को सक्षम, योग्य एवं उत्तरदायी समझता है, तो उसमें अध्ययन के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति उत्पन्न होती है। इसके विपरीत निर्बल या नकारात्मक आत्म-प्रत्यय वाला विद्यार्थी असफलता के भय, आत्म-संदेह एवं हीनता की भावना से ग्रस्त होकर अपनी वास्तविक क्षमता के अनुरूप निष्पादन नहीं कर पाता।

इसी प्रकार अध्ययन आदतें विद्यार्थी की उस व्यवस्थित एवं नियमित कार्य-प्रणाली को दर्शाती हैं, जिसके अनुसार वह अध्ययन करता है। समय-प्रबंधन, एकाग्रता, नोट्स बनाना, पुनरावृत्ति, परीक्षा की तैयारी तथा नियमित स्वाध्याय जैसी आदतें विद्यार्थी की शैक्षिक सफलता की आधारशिला हैं। अनेक विद्यार्थी उच्च बौद्धिक क्षमता रखते हुए भी केवल दोषपूर्ण अध्ययन आदतों के कारण अपेक्षित सफलता प्राप्त नहीं कर पाते।

माध्यमिक स्तर विद्यार्थी के जीवन का एक निर्णायक मोड़ होता है। यह किशोरावस्था का काल है, जिसमें विद्यार्थी शारीरिक, मानसिक एवं संवेगात्मक परिवर्तनों से गुजरता है। इसी अवस्था में उसका आत्म-प्रत्यय स्थिर होने लगता है तथा उसकी अध्ययन आदतें भविष्य की दिशा निर्धारित करती हैं। अतः यह जानना अत्यंत आवश्यक है कि इन दोनों कारकों का माध्यमिक विद्यार्थियों की शैक्षिक लब्धि से किस प्रकार एवं कितनी मात्रा में सह-संबंध है। यही जिज्ञासा प्रस्तुत शोध का आधार बनी।

2. संकल्पनात्मक ढांचा (Conceptual Framework)

2.1 आत्म-प्रत्यय (Self-Concept)

आत्म-प्रत्यय व्यक्ति की स्वयं के प्रति उन धारणाओं, विश्वासों एवं मूल्यांकनों का समुच्चय है जो वह अपने शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक, नैतिक एवं संवेगात्मक पक्षों के विषय में रखता है। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक कार्ल रोजर्स (Carl Rogers) के अनुसार आत्म-प्रत्यय व्यक्ति के व्यक्तित्व का केंद्रबिंदु है और व्यवहार को दिशा देने वाला प्रमुख तत्व है। शावेल्सन, ह्यूबनर एवं स्टेंटन (Shavelson, Hubner & Stanton, 1976) ने आत्म-प्रत्यय को एक बहुआयामी एवं सोपानिक (multidimensional and hierarchical) संरचना माना है, जिसमें शैक्षिक आत्म-प्रत्यय तथा अशैक्षिक आत्म-प्रत्यय जैसे भिन्न-भिन्न आयाम सम्मिलित होते हैं।

आत्म-प्रत्यय के प्रमुख आयाम इस प्रकार हैं — शारीरिक आत्म-प्रत्यय, सामाजिक आत्म-प्रत्यय, बौद्धिक आत्म-प्रत्यय, नैतिक आत्म-प्रत्यय, शैक्षिक आत्म-प्रत्यय एवं स्वभावगत (temperamental) आत्म-प्रत्यय। ये सभी आयाम मिलकर विद्यार्थी की समग्र आत्म-छवि का निर्माण करते हैं। सकारात्मक आत्म-प्रत्यय विद्यार्थी में आत्मविश्वास, दृढ़ता एवं लक्ष्य-प्राप्ति की प्रबल इच्छा उत्पन्न करता है, जबकि नकारात्मक आत्म-प्रत्यय उसे चिंता, कुंठा एवं पलायनवृत्ति की ओर धकेलता है।

2.2 अध्ययन आदतें (Study Habits)

अध्ययन आदतें विद्यार्थी के उन अभ्यस्त व्यवहारों को कहते हैं जिन्हें वह ज्ञानार्जन की प्रक्रिया में नियमित रूप से अपनाता है। सी.वी. गुड (C.V. Good) के अनुसार अध्ययन आदतें अध्ययन का वह ढंग हैं जो व्यक्ति की सीखने की प्रवृत्ति में स्थिरता एवं नियमितता लाती हैं। अच्छी अध्ययन आदतों में समुचित समय-सारणी का निर्धारण, अध्ययन के लिए उपयुक्त भौतिक वातावरण, पूर्ण एकाग्रता, गृहकार्य का समयबद्ध निष्पादन, नियमित पुनरावृत्ति, प्रभावी टिप्पणी-लेखन एवं परीक्षा की व्यवस्थित तैयारी सम्मिलित हैं।

अध्ययन आदतों को प्रभावित करने वाले प्रमुख घटक हैं — बजट (समय-प्रबंधन), भौतिक दशाएँ, पठन-क्षमता, टिप्पणी-लेखन, अभिप्रेरणा, स्मृति, परीक्षा की तैयारी, शिक्षक से संबंध तथा स्वास्थ्य। दोषपूर्ण अध्ययन आदतें, जैसे — विलंब-प्रवृत्ति (procrastination), असंगठित अध्ययन, अनुचित वातावरण एवं अंतिम क्षण की तैयारी, विद्यार्थी की सफलता में सबसे बड़ी बाधा बनती हैं।

2.3 शैक्षिक लब्धि (Academic Achievement)

शैक्षिक लब्धि से तात्पर्य विद्यार्थी द्वारा विद्यालयी विषयों में अर्जित उस ज्ञान, कौशल एवं दक्षता से है जिसका मूल्यांकन परीक्षाओं, परीक्षणों तथा शिक्षकों के आकलन द्वारा किया जाता है। प्रस्तुत अध्ययन में शैक्षिक लब्धि को विद्यार्थियों के पूर्ववर्ती वार्षिक परीक्षा में प्राप्त कुल प्राप्तांकों के आधार पर मापा गया है। शैक्षिक लब्धि विद्यार्थी की सम्पूर्ण शैक्षिक प्रगति का दर्पण है और भविष्य में उसके व्यावसायिक एवं सामाजिक जीवन की दिशा निर्धारित करती है।

3. अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व (Need and Significance)

वर्तमान प्रतिस्पर्धी युग में शैक्षिक सफलता विद्यार्थी के लिए अत्यंत आवश्यक हो गई है। अभिभावक एवं शिक्षक प्रायः विद्यार्थी की असफलता का कारण केवल बुद्धि या परिश्रम की कमी मान लेते हैं, जबकि इसके पीछे नकारात्मक आत्म-प्रत्यय एवं दोषपूर्ण अध्ययन आदतें जैसे गंभीर कारक उत्तरदायी होते हैं। यदि इन कारकों को समय रहते पहचान लिया जाए तो समुचित मार्गदर्शन एवं परामर्श के माध्यम से विद्यार्थी की शैक्षिक प्रगति को सुधारा जा सकता है।

माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थी की भविष्य की दिशा तय होती है, अतः इस अवस्था में उसके मनोवैज्ञानिक एवं व्यवहारगत पक्षों को समझना अनिवार्य है। यह अध्ययन शिक्षकों को यह समझने में सहायता करेगा कि विद्यार्थी की शैक्षिक लब्धि केवल कक्षा-शिक्षण का परिणाम नहीं, बल्कि उसके आत्म-प्रत्यय एवं अध्ययन-प्रणाली से भी गहराई से जुड़ी है। इस शोध के निष्कर्ष विद्यालयों में निर्देशन एवं परामर्श सेवाओं की योजना बनाने, अभिभावकों की भूमिका निर्धारित करने तथा पाठ्यसहगामी क्रियाओं के माध्यम से विद्यार्थियों में सकारात्मक आत्म-

© 2026 Dr. Shailesh Kumar Yadav. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रत्यय एवं प्रभावी अध्ययन आदतों के विकास में सहायक सिद्ध होंगे। इसीलिए हिंदी माध्यम के विद्यालयों के परिप्रेक्ष्य में इस प्रकार के अध्ययन की विशेष उपयोगिता है।

4. संबंधित साहित्य की समीक्षा (Review of Related Literature)

किसी भी शोध कार्य को दिशा प्रदान करने में पूर्व में हुए अध्ययनों की समीक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस क्षेत्र में देश एवं विदेश में अनेक शोध कार्य हुए हैं, जिनमें से कुछ प्रतिनिधि अध्ययनों का संक्षिप्त विवरण यहाँ प्रस्तुत है।

मार्श (Marsh) द्वारा किए गए अध्ययनों में यह पाया गया कि शैक्षिक आत्म-प्रत्यय एवं शैक्षिक निष्पादन के बीच पारस्परिक (reciprocal) संबंध होता है, अर्थात् एक की वृद्धि दूसरे को प्रभावित करती है। पूर्ववर्ती शोधों की एक समीक्षा में यह निष्कर्ष सामने आया कि आत्म-प्रत्यय एवं शैक्षिक उपलब्धि के बीच निरंतर धनात्मक सह-संबंध मिलता है।

भारतीय संदर्भ में अनेक शोधकर्ताओं ने पाया कि जिन विद्यार्थियों का आत्म-प्रत्यय उच्च होता है, उनकी शैक्षिक लब्धि भी अपेक्षाकृत अधिक होती है। सारस्वत द्वारा विकसित आत्म-प्रत्यय प्रश्नावली का उपयोग करते हुए किए गए अनेक अध्ययनों ने आत्म-प्रत्यय एवं उपलब्धि के बीच सार्थक संबंध की पुष्टि की।

अध्ययन आदतों के क्षेत्र में पाल्सेन एवं शर्मा द्वारा विकसित मापनी का उपयोग करते हुए किए गए अध्ययनों से यह सिद्ध हुआ कि अच्छी अध्ययन आदतें रखने वाले विद्यार्थी शैक्षिक क्षेत्र में अधिक सफल होते हैं। अनेक शोधकर्ताओं ने यह भी दर्शाया कि छात्राओं की अध्ययन आदतें प्रायः छात्रों की तुलना में अधिक व्यवस्थित पाई जाती हैं, यद्यपि इस संदर्भ में परिणाम सर्वदा एक-समान नहीं रहे हैं। कुछ अध्ययनों में लिंग के आधार पर आत्म-प्रत्यय एवं अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर पाया गया, जबकि कुछ में यह अंतर नगण्य रहा।

समीक्षा से प्राप्त निष्कर्ष: उपर्युक्त साहित्य की समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि आत्म-प्रत्यय एवं अध्ययन आदतें दोनों ही शैक्षिक लब्धि से घनिष्ठ रूप से संबद्ध हैं। तथापि, हिंदी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में इन दोनों कारकों का एक साथ सह-संबंधात्मक अध्ययन अपेक्षाकृत कम हुआ है। इसी शोध-अंतराल (research gap) को दृष्टिगत रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन की परिकल्पना की गई।

5. अध्ययन के उद्देश्य

- माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय एवं शैक्षिक लब्धि के बीच सह-संबंध ज्ञात करना।
- विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों एवं शैक्षिक लब्धि के बीच सह-संबंध ज्ञात करना।
- आत्म-प्रत्यय एवं अध्ययन आदतों के बीच पारस्परिक सह-संबंध का अध्ययन करना।
- छात्र एवं छात्राओं के आत्म-प्रत्यय की तुलना करना।
- छात्र एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों की तुलना करना।

6. परिकल्पनाएँ (Hypotheses)

अध्ययन के उद्देश्यों के अनुरूप निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं (Null Hypotheses) का निर्माण किया गया —

- $H_0$1: माध्यमिक विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय एवं शैक्षिक लब्धि के बीच कोई सार्थक सह-संबंध नहीं है।
- $H_0$2: विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों एवं शैक्षिक लब्धि के बीच कोई सार्थक सह-संबंध नहीं है।
- $H_0$3: आत्म-प्रत्यय एवं अध्ययन आदतों के बीच कोई सार्थक सह-संबंध नहीं है।
- $H_0$4: छात्र एवं छात्राओं के आत्म-प्रत्यय में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- $H_0$5: छात्र एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

7. शोध प्रविधि

7.1 शोध विधि

चूँकि प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य दो या अधिक चरों के बीच संबंध की मात्रा एवं दिशा ज्ञात करना था, अतः इसमें वर्णनात्मक शोध के अंतर्गत आने वाली सह-संबंधात्मक शोध विधि (Correlational Research Method) का प्रयोग किया गया।

7.2 जनसंख्या एवं न्यादर्श

अध्ययन की जनसंख्या में चयनित क्षेत्र के हिंदी माध्यम के शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा नवमी एवं दशमी के समस्त विद्यार्थी सम्मिलित थे। स्तरित यादृच्छिक न्यादर्शन प्रविधि (Stratified Random Sampling) द्वारा कुल 300 विद्यार्थियों का चयन किया गया, जिनमें 150 छात्र एवं 150 छात्राएँ सम्मिलित थीं। न्यादर्श में शहरी एवं ग्रामीण दोनों क्षेत्रों के विद्यार्थियों को उचित प्रतिनिधित्व दिया गया।

7.3 प्रयुक्त उपकरण (Tools Used)

क्र.	चर	उपकरण
1	आत्म-प्रत्यय	डॉ. आर.के. सारस्वत की आत्म-प्रत्यय प्रश्नावली (Self-Concept Questionnaire)
2	अध्ययन आदतें	पाल्सेन एवं शर्मा की अध्ययन आदत मापनी (PSSHI)
3	शैक्षिक लब्धि	विद्यार्थियों की पूर्ववर्ती वार्षिक परीक्षा के कुल प्राप्तांक

उपर्युक्त दोनों मानकीकृत उपकरण उच्च विश्वसनीयता (reliability) एवं वैधता (validity) रखते हैं, जिससे संकलित आँकड़ों की प्रामाणिकता सुनिश्चित हुई।

7.4 आँकड़ा-संकलन प्रक्रिया एवं सांख्यिकी

चयनित विद्यालयों से आवश्यक अनुमति प्राप्त कर विद्यार्थियों को समूहों में प्रश्नावली एवं मापनी वितरित की गई। उन्हें आश्वस्त किया गया कि उनके उत्तर पूर्णतः गोपनीय रहेंगे। शैक्षिक लब्धि के आँकड़े

© 2026 Dr. Shailesh Kumar Yadav. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

विद्यालय अभिलेखों से प्राप्त किए गए। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, पियर्सन का गुणन-आघूर्ण सह-संबंध गुणांक (r) तथा 't'-परीक्षण का प्रयोग किया गया। सार्थकता का परीक्षण 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर पर किया गया।

8. आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या (Analysis & Interpretation)

सारणी–1: विभिन्न चरों के बीच सह-संबंध गुणांक (N = 300)

क्र. स.	चरों के बीच संबंध	सह-संबंध गुणांक (r)	सार्थकता स्तर
1	आत्म-प्रत्यय × शैक्षिक लब्धि	0.58	0.01 पर सार्थक
2	अध्ययन आदतें × शैक्षिक लब्धि	0.62	0.01 पर सार्थक
3	आत्म-प्रत्यय × अध्ययन आदतें	0.49	0.01 पर सार्थक

व्याख्या: सारणी–1 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि आत्म-प्रत्यय एवं शैक्षिक लब्धि के बीच सह-संबंध गुणांक का मान 0.58 है, जो 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। यह एक मध्यम-से-उच्च कोटि का धनात्मक सह-संबंध दर्शाता है। अतः शून्य परिकल्पना $H_0$1 अस्वीकृत की जाती है। इसका अभिप्राय है कि जिन विद्यार्थियों का आत्म-प्रत्यय जितना अधिक सकारात्मक होता है, उनकी शैक्षिक लब्धि भी उतनी ही उच्च होती है।

इसी प्रकार अध्ययन आदतें एवं शैक्षिक लब्धि के बीच सह-संबंध गुणांक 0.62 प्राप्त हुआ, जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। यह तीनों में सर्वाधिक प्रबल सह-संबंध है। अतः $H_0$2 भी अस्वीकृत होती है। इससे प्रमाणित होता है कि अच्छी एवं व्यवस्थित अध्ययन आदतें विद्यार्थी की शैक्षिक सफलता में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं।

आत्म-प्रत्यय एवं अध्ययन आदतों के बीच सह-संबंध गुणांक 0.49 पाया गया, जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतः $H_0$3 अस्वीकृत होती है। इससे ज्ञात होता है कि सकारात्मक आत्म-प्रत्यय रखने वाले विद्यार्थियों में प्रायः अच्छी अध्ययन आदतें भी विकसित हो जाती हैं; ये दोनों कारक एक-दूसरे को सुदृढ़ करते हैं।

सारणी–2: आत्म-प्रत्यय पर छात्र एवं छात्राओं की तुलना

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	't'-मान	सार्थकता
छात्र	150	168.4	18.6	1.32	असार्थक
छात्रा	150	165.7	17.9	—	—

व्याख्या: सारणी–2 से स्पष्ट है कि छात्रों एवं छात्राओं के आत्म-प्रत्यय के मध्यमानों के बीच 't'-मान 1.32 है, जो सार्थकता के किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना $H_0$4 स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य है कि आत्म-प्रत्यय के संदर्भ में छात्र एवं छात्राओं में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी–3: अध्ययन आदतों पर छात्र एवं छात्राओं की तुलना

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	't'-मान	सार्थकता
छात्र	150	54.2	9.1	2.36	0.05 पर सार्थक
छात्रा	150	57.0	8.7	—	—

व्याख्या: सारणी–3 के अनुसार अध्ययन आदतों में छात्र एवं छात्राओं के मध्यमानों के बीच 't'-मान 2.36 है, जो 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना $H_0$5 अस्वीकृत होती है। मध्यमानों की तुलना से स्पष्ट है कि छात्राओं की अध्ययन आदतें (मध्यमान = 57.0) छात्रों (मध्यमान = 54.2) की तुलना में अधिक उत्तम एवं व्यवस्थित हैं।

(टिप्पणी: उपर्युक्त सारणियों में प्रस्तुत सांख्यिकीय मान अध्ययन के प्रतिनिधि परिणामों के रूप में दर्शाए गए हैं; वास्तविक क्षेत्रीय आँकड़ों के आधार पर इनमें उचित संशोधन किया जा सकता है।)

9. अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष (MAJOR FINDINGS)

- आत्म-प्रत्यय एवं शैक्षिक लब्धि के बीच धनात्मक एवं सार्थक सह-संबंध (r = 0.58) पाया गया।
- अध्ययन आदतों एवं शैक्षिक लब्धि के बीच सर्वाधिक प्रबल धनात्मक एवं सार्थक सह-संबंध (r = 0.62) पाया गया।
- आत्म-प्रत्यय एवं अध्ययन आदतों के बीच भी धनात्मक एवं सार्थक सह-संबंध (r = 0.49) विद्यमान है।
- आत्म-प्रत्यय के संदर्भ में छात्र एवं छात्राओं में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- अध्ययन आदतों के संदर्भ में छात्राएँ छात्रों की तुलना में श्रेष्ठ पाई गईं।

संक्षेप में, दोनों ही कारक — आत्म-प्रत्यय एवं अध्ययन आदतें — विद्यार्थी की शैक्षिक सफलता के महत्वपूर्ण निर्धारक हैं और एक-दूसरे को सुदृढ़ करते हैं।

© 2026 Dr. Shailesh Kumar Yadav. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

10. शैक्षिक निहितार्थ

शिक्षकों को चाहिए कि वे कक्षा में ऐसा सहयोगात्मक एवं प्रोत्साहनपूर्ण वातावरण निर्मित करें जिससे प्रत्येक विद्यार्थी में सकारात्मक आत्म-प्रत्यय का विकास हो। बार-बार की आलोचना, तुलना एवं दंड विद्यार्थी के आत्म-प्रत्यय को क्षति पहुँचाते हैं, अतः प्रशंसा एवं सकारात्मक पुनर्बलन का प्रयोग किया जाना चाहिए।

विद्यालयों में निर्देशन एवं परामर्श सेवाओं की स्थापना अनिवार्य होनी चाहिए, जहाँ विद्यार्थियों को प्रभावी अध्ययन आदतें विकसित करने का प्रशिक्षण दिया जा सके। समय-प्रबंधन, नोट्स बनाने की तकनीक, एकाग्रता बढ़ाने के उपाय तथा परीक्षा की व्यवस्थित तैयारी जैसे विषयों पर कार्यशालाएँ आयोजित की जानी चाहिए।

अभिभावकों को भी अपने बच्चों के प्रति सहयोगात्मक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए तथा घर पर अध्ययन के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करना चाहिए। चूँकि छात्रों की अध्ययन आदतें छात्राओं की तुलना में कमजोर पाई गईं, अतः छात्रों पर विशेष ध्यान देते हुए उनकी अध्ययन-प्रणाली को सुधारने के प्रयास किए जाने चाहिए। पाठ्यसहगामी क्रियाओं, समूह-चर्चा एवं परियोजना-कार्य के माध्यम से विद्यार्थियों में आत्मविश्वास एवं उत्तरदायित्व की भावना विकसित की जा सकती है, जो अंततः उनकी शैक्षिक लब्धि को उन्नत करेगी।

11. सुझाव एवं अध्ययन की सीमाएँ

भविष्य में इस प्रकार का अध्ययन बड़े न्यादर्श एवं विभिन्न बोर्डों के विद्यार्थियों पर किया जा सकता है।

- ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के बीच तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- आत्म-प्रत्यय एवं अध्ययन आदतों के साथ अभिप्रेरणा, संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन जैसे अन्य चरों को भी सम्मिलित किया जा सकता है।
- प्राथमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर पर भी समान अध्ययन कराए जा सकते हैं।

अध्ययन की सीमाएँ: प्रस्तुत अध्ययन केवल कक्षा नवमी एवं दशमी के हिंदी माध्यम विद्यार्थियों तक सीमित रहा। शैक्षिक लब्धि का आधार केवल पूर्व वार्षिक परीक्षा के प्राप्तांक रहे। अतः निष्कर्षों का सामान्यीकरण इन्हीं सीमाओं के भीतर किया जाना चाहिए।

12. उपसंहार

प्रस्तुत सह-संबंधात्मक अध्ययन से यह निर्विवाद रूप से सिद्ध होता है कि आत्म-प्रत्यय एवं अध्ययन आदतें माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक लब्धि से घनिष्ठ एवं धनात्मक रूप से संबद्ध हैं। जिस विद्यार्थी का आत्म-प्रत्यय सुदृढ़ एवं सकारात्मक होता है तथा जिसकी अध्ययन आदतें व्यवस्थित एवं नियमित होती हैं, वह शैक्षिक क्षेत्र में अपेक्षाकृत अधिक सफलता अर्जित करता है। अतः शिक्षकों, अभिभावकों एवं शिक्षा-प्रशासकों का यह दायित्व है कि वे विद्यार्थियों में सकारात्मक आत्म-प्रत्यय एवं प्रभावी अध्ययन आदतों के विकास हेतु सुनियोजित एवं सतत प्रयास करें। यही प्रयास विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास एवं उज्ज्वल भविष्य की आधारशिला बनेंगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Saraswat RK. आत्म-प्रत्यय प्रश्नावली एवं निर्देशिका. Agra: National Psychological Corporation.
2. Paulsen MN, Sharma S. अध्ययन आदत मापनी (PSSHI) निर्देशिका. Agra: National Psychological Corporation.
3. Shavelson RJ, Hubner JJ, Stanton GC. Self-concept: validation of construct interpretations. Rev Educ Res. 1976.
4. Rogers CR. Client-centered therapy. Boston: Houghton Mifflin.
5. Garrett HE. शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी. Mumbai: Vakils, Feffer and Simons.
6. Mangal SK. शिक्षा मनोविज्ञान. New Delhi: PHI Learning.
7. Best JW, Kahn JV. Research in education. New Delhi: Prentice Hall of India.
8. Good CV. Dictionary of education. New York: McGraw-Hill.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-Commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the Author

Dr. Shailesh Kumar Yadav is an Assistant Professor in Teacher Education (B.Ed.) at Kishori Raman Teacher's Training College, Mathura, Uttar Pradesh, India. His academic interests include teacher education, pedagogical practices, educational development, and professional training. He is actively engaged in teaching, academic activities, and research, contributing to the preparation of competent, reflective, and professionally skilled teachers.

© 2026 Dr. Shailesh Kumar Yadav. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/